Neelkantha Vadvanal Stotram

नीलकण्ठ वडवानल स्तोत्रम्

GURUDEV RAJ VERMA

Contact- +91-9897507933**,** +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

यह नीलकण्ठ बडवानल स्तोत्र सर्वकष्ट निवारक है। इसके प्रभाव से परकृत्या, प्रेतबाधा, मृत्युसंकट, ग्रहों की कुदृष्टि, शत्रुओं के षडयंत्र, विषयोग, असाध्य रोगादि व्याधियों से शीघ्र मुक्ति मिलती है। प्रतिदिन त्रिकाल संध्या स्तोत्र का पाठ करने से आर्थिक लाभ भी होता है। सर्वप्रथम महादेव का प्रारम्भिक पूजन करें।

विनियोग- ॐ अस्य श्रीमहानीलकण्ठ अथर्वणः शिरः शिखा वडवानल नीलकण्ठास्त्र महामन्त्रस्य अथर्वण ऋषिः, नानाछन्दांसि, श्रीमहानीलकण्ठोरुद्रो देवता, ह्रीं बीजं, सः शक्तिः, ग्लौं कीलकं, श्रीनीलकण्ठ वर प्रसाद प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- ॐ अथवर्णऋषये नमः शिरसि। नानाछन्दोभ्यो नमः मुखे। श्रीमहानीलकण्ठोरुद्रो देवतायै नमः हृदि। हुं बीजाय नमो गुह्ये। सः शक्तये नमः पादयोः। ग्लौं कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

Shri Raj Verma ji
Contact - 09897507933, 07500292413

अंगन्यास- ॐ ह्रां वडवानलास्त्राय नीलकण्ठास्त्राय अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं अथर्वणशिखा नीलकण्ठास्त्राय तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं कालरुद्राय नीलकण्ठास्त्राय मध्यामाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं नीलकण्ठास्त्राय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं व्योमव्यापिने हिरण्ययाय नीलकण्ठास्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः अनेक ब्रह्माण्ड नीलकण्ठास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास- ॐ ह्रां वडवानलास्त्राय नीलकण्ठास्त्राय हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं अथर्वणशिखा नीलकण्ठास्त्राय शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं कालरुद्राय नीलकण्ठास्त्राय शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं नीलकण्ठास्त्राय कवचाय हुं। ॐ ह्रौं व्योमव्यापिने हिरण्ययाय नीलकण्ठास्त्राय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अनेक ब्रह्माण्डाय नीलकण्ठास्त्राय अस्त्राय फट्।

ध्यानम्- बाणं कालान्तकालं ह्यभयवरकरं सोमसूर्य्याग्निनेत्रम्। कालं कालाग्निरुद्रं त्रिपुरहरमहामन्मथं दह्यमानम्।।

खंगं खेटं पिनाकं सपरशुडमरुभिन्दिपालं त्रिशूलम्। घोरास्त्रं पंचवक्त्रं गलनिहितगरं नीलकण्ठ भजेऽहं।।

मानस पूजनम्- अथर्वणास्त्रमन्त्र च वडवानलनामकम्। नीलकण्ठास्त्रविद्याख्यं मन्त्ररूपं हृदि स्मरेत्।।

Shri Raj Verma ji
Contact - 09897507933, 07500292413

कोटिसूर्यप्रतीकाशं ताण्डवप्रलयाकृतिम्। भस्मीकृतजगद् व्याप्तं विग्रहं च समाश्रये।।

मृत्युघ्नं पापदमनं घृतानाममृतप्रदम्। सुधामयं नीलकण्ठमस्त्ररूपं हृदि स्मरेत्।

एवं विकालप्रयोगं प्रजपेत् साधकोत्तमः। सर्वार्थसिद्धिः पठनात् तेजोवृद्धिकरं परम्।।

स्तोत्रम्- 'ॐ आं ह्रीं ग्लौं ऐं क्लीं सौं श्रीं स्त्रां क्षां क्षां वं क्रौं एहि एहि महानीलकण्ठाय परमितवक्त्राय आविर्भूत चतुर्दशभुवनाय अण्डज पिण्डज उद्भिजजरायुज अन्तर्यामिने पंचवक्त्राय पंचाननाय उमावराय वृषभवाहनाय भस्मोद्धूलितविग्रहाय भाललोचनाय परमहंसाय पंचतत्त्वस्वरूपाय पंचाग्निमयाय पद्मबाणान्तकाय तत्पुरुषाय घोर घोर सद्योजात वामदेवेशाय अनादि पंचब्रह्माण्डाय अष्टमूर्तये सृष्टिरक्षण संहार तत्पराय रक्षोगण निकृन्ताय लक्ष्मीवरसखाय त्रिपुरान्तकाय त्र्यम्बकाय त्रिदश पूजिताय त्रिनेत्राग्निमयाय त्रयीपुष्करात्मिकाय ज्वलस्वरूपाय जगज्जनकाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः ग्लां ग्लीं ग्लूं ग्लौं ग्लं ग्लः झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रैं झ्रौं झ्रः छ्रां छ्रीं छ्रूं छ्रैं छ्रौं छ्रः रां रीं रूं रैं रौं रः रविकोटि प्रभाय रजोगुण दूराय कैलाशवासिने करुणाकराय कन्दर्पकोटि कान्तियुक्ताय युगान्तकाय प्रलयरुद्राय कामिक फलप्रदाय कलिन्दराय एकमूर्ति द्विमूर्ति त्रिमूर्ति चतुमूर्ति पंचमूर्तिमयाय

पंचवक्त्राय पंचदर्शन करुणाय लोकान्विताय अनन्त ब्रह्माण्ड मयाय काल ब्रह्मेश्वराय अवरलवर अन्धकासुर संहारकारिणे अमित पराक्रमाय तारकासुर निरनाशकाय वडवानल नीलकण्ठाय स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर परम कारुणीकाय घोर घोरतर तनुरूप तत्त्वात्मिकाय चट चट प्रचट प्रचट परमहंस निर्वापणाय कह कह यम यम बम बम गंगाधराय बन्धय बन्धय घातय घातय मंगल प्रदाय प्रदाय वीर यु क ए इ ल ह्रीं कालरूपधराय ह स क हल ह्रीं सच्चिदानन्दाय सकल ह्रीं ह्रीं ह्रीं नित्यमुक्ति प्रियाय एकाहिक द्वाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक पक्षज्वर मासिकज्वर साम्वत्सरिकज्वर सर्वज्वरान् नाशय नाशय वातरोग स्वासरोग पैत्रकरोग श्लेष्मरोगान् हर हर यू क्रिमी ज्वरान् नाशय नाशय पिशाचादीन् निकृन्तय निकृन्तय आविर्भूतानन्त ब्रह्माण्डकाय विश्वमयाय सास्वतहिरामग्राय ह्रुं ह्रं ह्रूं कृतभस्मोद्धूलित सर्वोत्तम किंकिणीरव महाशंकराय उमार्द्धदेहाय चन्द्रशेखराय नानाविषं सर्वविषं हर हर शमय शमय निर्विषं दन्तीविषं धत्तूरविषं कृत्रिमविषं शमय शमय प्रधान अमृतं नीलकण्ठाय आवेशय आवेशय स्फुर स्फुर सूर्य शशांकाय चन्द्रकोटि सुशीतलाय सान्द्र सिन्दूरमयाय आं ह्रीं क्रों कालरुद्राय करुणाकराय हर विषं हर रोगान् हर निकृन्तनाय कृत्रिमान् निर्नाशय निर्नाशय ग्रह निग्रह अनुग्रहान् शमय शमय शान्तिं कुरु कुरु प्रारब्ध संचित क्रियमाणान् नाशय नाशय अकारण बान्धवाय अनवरत लक्षणैक कटाक्ष परायणाय सर्वसिद्धि प्रदाय चिन्तित मनोरथ सुन्दराय आनन्द परायणाय मां रक्ष रक्ष शत्रून्

द्वेषकान् किल्विषासाद्रसोदुर्मपाय ॐ आं ह्रीं क्रां हुं कालरुद्राय करुणाकराय कृत्रिमधारकान् शत्रून् क्षुद्धौघधरान् भस्मी कुरु कुरु असुयापरान् निकृन्तय परमंत्र परयंत्र परतंत्र चेटक परवाक्कुट परजपहोम कृत अभिचारान् नाशय नाशय स्वमंत्र स्वयंत्र स्वतंत्र स्वकृत प्रयोगान् प्रकाशय प्रकाशय मे मनोरथान् क्षिप्रं सफलं कुरु कुरु सर्वजगन्मयाय स्वतंत्र स्वमंत्र स्वयंत्र मयाय सर्वांगं सकल वैद्यकार्चे यशावराधनेकादितंत्र स्वरूपाय पंचवक्त्र वडवानलाय नीलकण्ठाय एहि एहि आगच्छ आगच्छ सुहृदयकमल आहितोभव संस्थापिता भव सर्वतोमुख सदाशिवाय सर्वाय मकर किरीट कोटि कान्त्यालंकृताय पाद पद्माय ॐ आं ह्रीं क्रों वडवानल प्रलयाग्नि अथर्वणास्त्र नीलकण्ठाय ममैव हृदये सदा स्फुर स्फुर प्रलयानल घोर घोरतर तनुरूप चट चट प्रचट प्रचट वं वं नीलकण्ठाय वडवानल अथर्वणास्त्ररूपिणो वरदाभयक्षिप्रप्रसन्नो भव मम कायिक वाचिक मानसिक सिद्धि देहि देहि हुं हुं आं हां वं ॐ क्रों अमृत नीलकण्ठाय मम हृदये वशं मम काल मृत्युर्विनाशनं कुरु अपमृत्यु निर्दलनं कुरु अपमृत्युं प्रधान् अमृत नीलकण्ठाय मम शरीरे अमृतं कुरु कुरु अत्यन्त लक्ष्मीसरस्वती निदानं कुरु कुरु ममैव कर स्पर्शान् नाना रोगान् नाशय नाशय भूत प्रेत पिशाच ब्रह्मराक्षस शाकिनी डाकिनी रुद्रपिशाचान् अनेक भूत प्रेत पिशाचान् पलायनं कुरु मम मनसा स्मरण मात्रेण दारिद्रं विदारित विग्रहस्थस्य अपरमितैश्वर्य प्रसन्नं कुरु कुरु वाक्सिद्धिं देहि नीलकण्ठ नवनाथाय

Shri Raj Verma ji
Contact - 09897507933, 07500292413

चतुरशीतिसिद्धैः सदा पूजित चरणकमलाय चर्चित चिद्रूपाय निवारसूकररूपाय चिनानन्द ज्ञान भक्ति वैराग्य प्रदाय मम हृदये आवेशय सदानन्द सर्वकामित सर्वज्ञ आगतानागता ज्ञानवान् कुरु कुरु चतुष्षष्ठिविद्या प्रवीणां कुरु कुरु ॐ आं ह्रां ऐं ग्लों झ्रां क्लीं श्रीं ह्रीं क्रों सद्यः सकलविद्याप्रदा नीलकण्ठाय वद वद वाग्विद्वासं मां कुरु कुरु प्रचण्ड ब्रह्माण्ड परिपूरित विद्या नीलकण्ठ वाग्विलास चण्डवान् कुरु कुरु क्रों ऐं ह्रूं स्त्राँ आँ उल्लसत्तटि नीलकण्ठाय उत्कृष्ट फलप्रदाय उमार्धशरीराय उत्तरोत्तर चिरकाल महादारिद्र अंधकार निलयवन्तं निर्मलैश्वर्यनिदा नित्यानन्द लक्ष्मी सारस्वतं कुरु कुरु लक्ष्मीतत् पदाम्बुज लक्ष्मीप्रद नीलकण्ठ मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् सद्योदारिद्रवन्तं कुरु कुरु अत्यन्त रोगजाडय पीठान् कुरु कुरु शत्रून् विद्यान् शमदमादि शान्ति गुणप्रदाय परम अचरलैक महामहानीलकण्ठाय खण्डतं वैदि दण्ड प्रचण्ड दोर्दण्ड पिण्डि कृत वैरि मण्डलाय अमर पुण्डरीक सखाय द्रां द्रीं द्रूं द्रैं द्रौं द्रः ढक्कावाद्य प्रियाय नरकपाल हस्ताय शाश्वतकीर्तये सहस्रभुजाय सर्व मंत्र सिद्धिं कुरु कुरु अयुतभुजाय आयुतार्णवाय आयुष्मन्तं कुरु कुरु नीलकण्ठाय सततं मम हृदये चिन्तित मनोरथ सिद्धिं कुरु कुरु चिदानन्दकान् कुरु कुरु पंचवक्त्र शतवक्त्र सहस्रवक्त्र अयुतवक्त्र अनन्तवक्त्र अनन्तानन्तभुज अनंतभुजब्रह्माण्ड परिपूर्ण विराट्रूपाय विश्वतोमुख विश्वरूपाक्ष ॐ क्लीं ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा रूपं महापशुपतास्त्राय। ॐ ह्रां ह्रीं क्लीं ऐं ग्लौं श्रीं ह्रीं क्रौं संमोहनाय

Shri Raj Verma ji
Contact - 09897507933, 07500292413

महापशुपतास्त्राय वडवानल नीलकण्ठास्त्राय एहि एहि आगच्छ आगच्छ स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर प्रलयानल घोरतर तनुरूपाय चट चट प्रचट प्रचट सम्मोहनाय सदा मां रक्ष रक्ष मम हृदये सदा स्थिरो भव वरप्रदो भव साक्षात्कार सिद्धिप्रदो भव चर्मचक्षुष्क दर्शन्प्रदोभव सिद्धि महाथर्वणास्त्राय प्रलयानल मृत्युंजय प्रसन्न सम्मोहन पाशुपत दर्शय दर्शय सहशत्रु मंत्र खणुन विषंध्वंशनवीर घोरनीलकण्ठास्त्राय वीरघोरं मां रक्ष रक्ष मम हृदये सदा स्थिरो भव मंगलानां दोषान् संमंगल सहस्रानन्तव्रत नीलकण्ठास्याय हुं फट् स्वाहा।’

फलश्रुति- कण्ठादिदारुणं अंकंडं मन्त्रं अस्त्रं च अथर्वणशिखास्त्रकम्। सहस्रं यो जपेद् विद्वान मुण्डं च मुखरोपि वा।

येन केनापि जपतो मंत्रसिद्धि मवाप्नुयात्। कालरुद्रमहानाम्ना विषं च ध्वंनन्तथा।

श्रीमहानीलकण्ठाख्यं अस्त्रराजमिदं कृतम्। जपात् कुष्ठशरीराणां निर्मलं देहमाप्नुयात्। अष्टदशानि कुष्ठानि नश्यन्ते नात्र संशयः।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana

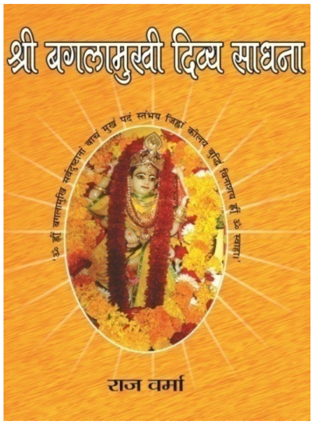

Shri Raj Verma ji
Contact - 09897507933, 07500292413